सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, मई-जून, 2010

पवित्र आत्मा की छाप

'परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है।' (इफिसियों 4:30)

जब एक व्यक्ति मन फिराता है, वह आत्मिक गर्भ में हो कर परमेश्वर के राज्य में जन्म लेता है। यह एक रहस्यमय कार्य है जो पवित्र आत्मा द्वारा संभव है। - जो आदमी के हृदय और मन पर एक अद्भुत कार्य है। यह परमेश्वर का ज्ञानातीत कार्य है जो मसीह के गुणों को एक आदमी में उतारता है। उस समय से पवित्रात्मा उसकी अगुवाई करता है और सँभालता है। परमेश्वर के जनों की तरफ उसमे एक अध्यात्मिक झुकाव भी लाता है। पवित्र आत्मा को जो पसंद-ना पसंद रहता है, वही उसका भी अपना बन जाता है।

पवित्र आत्मा, उसमें जो सारी आत्मिक शक्तियाँ है उन्हें अपने वश में कर लेता है और परमेश्वर के राज्य की उन्नति के लिए इस्तेमाल करता है। अपने विचारों को, कल्पनायें, इच्छा शक्ति, लगाव और अभिलाषों को पवित्र आत्मा अपने नियंत्रण मे ले कर उन्हें परमेश्वर का बना देता है। अगर शरीर किसी भी क्षेत्र में पवित्रात्मा का विरोध करता है तो उन्हें दुख पहुँचता है। पर पवित्रात्मा आपकी इस तरह अगुवाई कर रहा है कि आप परमेश्वर को कह पाये 'हे अब्बा! हे पिता!'

परमेश्वर की इच्छा के आप जितना आधीन होते हो, उतना ही पवित्रात्मा आपको अपने वश में

पृष्ठ 2 पर..पवित्र आत्मा.

आत्मिक उन्नति केलिए देखना न भूलें

"परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह 7:00 बजे

कार्य करता परमेश्वर

व्यापार में, सरल-कारगर प्रबन्धक प्रणाली तथा सुव्यवस्थित प्रशासन - ऐसा काल में हम जी रहें है। हम यह सोचने का साहस कर रहे हैं कि अपनी बुद्धि द्वारा हम परमेश्वर के ज्ञान को और अधिक विकसित कर सकते हैं। यह नि:क्षमा योग्य अहंकार के सिवाय और कुछ नही।

व्यापारी जो अपने कारोबार को बहुत कुशलता से चलाते हैं, ऐसे लोगों को कलीसिया की मंडली में और अगुवाई करने के लिए चुना जा रहा है। उन्हें यकीन है कि अब से कलीसियाँ, बहुत अच्छे वित्तीय आधार पर चलेगी। व्यवसायी जानते होंगे कि वे अपने व्यापार को कैसे चलायें; मगर जीवित परमेश्वर खूब अच्छी तरह जानते हैं कि वे अपनी कलीसियाँ को कैसे चलायें। प्रभु यीशु मसीह की कलीसियाँ को हम प्रबंधित करके चला रहें है - वास्तव में, यह बड़ी गलत सोच है।

बाइबल कहता है, 'इस प्रकार कलीसियाएं विश्वास में दृढ़ होती गई और संख्या में दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई।' (प्रेरितों के काम 16:5) यहाँ हम क्रम पर ध्यान दें। लोग पहले पवित्र जीवन जीने में स्थिर हुए। 15 वें अध्याय में, कलीसिया के प्रमुखों ने यह आज्ञा जारी की कि 'मूर्तियों पर बलिदान चढ़ाई गई वस्तुओं से, लहू से गला घोंटे हुओं के मांस से, तथा व्यभिचार से परे रहो।' यहाँ पवित्र जीवन का आचरण करने के लिए, परमेश्वर का दिया हुआ नियम है। अगर ये आदमी दुबारा व्यभिचार तथा मूर्ति पूजा और उनके आचरण की ओर फिरे तो परमेश्वर से संगति संभव नहीं होगी। जब एक कलीसिया अपने आपको शुद्ध करके, परमेश्वर के आधीन होकर विनम्रता से चलने लगेगी तो वहाँ आशीष की बढ़ौती होगी। तब जीवित उद्धारकर्ता को किस रीति और किस तरह महिमा पहुँचाएँ, इस बात पर सारा ध्यान केन्द्रित होगा। जब तुम्हारा हृदय, यीशु को महिमान्वित करने की इच्छा से भर जाए, तब कई ध्यान भंग करनेवाले, तुच्छ और मूर्खता पूर्ण आडम्बर, तुम से बहुत दूर रहेंगे। परमेश्वर से तुम्हारा आत्मा संपर्क में रहेगा तथा तुम्हारी आत्मा, गुमराह लोगों को खोजने में तेज हो जायेगी। लगातार पापियों का हृदय-परिवर्तन होना, नये और कठिन स्थानों पर कलीसियाँओं का उठना, अब तक न पहुँच पाए तथा दूर दराज के क्षेत्रों में भी आत्मायें जीतने का प्रयास - यह सब अपने आप संभव होंगे।

यह बहुत दुर्भाग्य की बात है कि कई लोगों की ऐसी धारणा है - पैसों से ही परमेश्वर का कार्य किया जाता है। मैं यह जोर देकर कहता हूँ कि यह सच नही। इसके विपरीत, जब किसी की ज्यादा से ज्यादा पैसे और वस्तुओं की संमृद्धी होने लगे तो उसका आध्यात्मिक जीवन नाक के बल डुबकी लगाएगा। पैसों से इमारतों का निर्माण हो सकता है, पैसों से महेंगे स्मारक बन सकते है तथा पैसों से महान मकबरें बन सकते है। मगर पैसों से एक भी पापी का हृदय परिवर्तन कभी नही हो सकता। मसीह की ओर, बहुत बड़ी संख्या में आदमी और औरतें जब फिरते देखते है तो, पूर्वी देशों के लोग, तुरन्त इस नतीजे पर पहुँचते है कि इस सबके पीछे बहुत पैसे लगाए गए होंगे।

प्रभु यीशु मसीह ने अपना कार्य ऐसे हालात मे किया जबकि उनके पास महसूलदार को कर चुकता करने के लिए भी पैसे नहीं थे। उन्हें शमौन पतरस को झील में बंसी डालकर, जो मछली पहिले ऊपर आए, उसका मुंह खोलने पर मिलनेवाले सिक्के को लाने भेजना पड़ा। जब पतरस और यूहन्ना प्रार्थना करने देवालय में गये थे, उनके पार दो पैसे भी नहीं थे। मंदिर के फाटक पर बैठे, लंगड़े भिखारी की चंगाई का चमत्कार तथा उसके बाद परमेश्वर के वचन का उपदेश-परिणाम स्वरूप उस दिन 5000 आदमियों ने अपना मन फिराया।

हाँ, परमेश्वर ने अपने बच्चों को अपनी जरूरत के अनुसार प्रतिदिन मन्ना दिया। आज हमें, हर दिन विश्वास, प्रेम, पवित्रता की ताजा खुराक की जरूरत है। तब प्रतिदिन, परमेश्वर के राज्य में

पृष्ठ 2 पर..कार्य करता परमेश्वर..

पृष्ठ 1 से..कार्य करता परमेश्वर...

लोगों को प्रवेश करते देख पायेंगे। मसीही जीवन एवं क्रियाकलाप के किसी भी भाग में हार, बहुत ही अस्वाभाविक, खतरनाक और अनर्थकारी है। अगर हम विश्वास में प्रतिदिन नही बढ़ते तो, जल्दी ही शैतान हमें दहशत, अनिश्चयता एवं अयोग्य स्थिति में पहुँचा देगा। अगर यीशु के चरणों में, हम हर रोज जीवन की रोटी को नही बटोरते, तो प्रेम की संवेदना और ज्वाला मंद हो जायेगी। और हम प्रतिदिन लोगों तक पहुँच नही पायेंगे। हमारी प्रार्थना में उत्सुक्ता नही रहेगी। तथा हमारे सारे आध्यात्मिक यंत्र-सामग्री में जंग लग जायेगा, यहाँ तक की सब नाकाम हो जायेंगे।

- जोशुआ दानियेल।

पृष्ठ 1 से..पवित्र आत्मा..

करता है। और परमेश्वर के उत्तराधिकार होने का भाव, आप में उतना बढ़ता जायेगा। आप इस बात से अच्छी तरह वाकिफ रहोगे की आप अपने नही हो। पवित्रात्मा आपका स्वामी है और वही आपकी अगुवाई करता है। आध्यात्मिक फल, आप में दिखने लगेंगे। आपकी जिन्दगी और विचारों से चारों तरफ दुनिया पर विजय पाते आप देख पाओगे, हाँलाकि शुरुआत में आपका विरोध हो सकता है। आप के इर्द-गिर्द लोग यह जानेंगे कि आपका चुना हुआ मार्ग बेहतर है और सच्चा है। वे अपने मन में इस बात से निश्चित होंगे और आपकी बातें सुनने के लिए तैयार होंगे। कब? जब आप पवित्रात्मा के आधीन होते हो, आप जो कहते हो और जो जीते हो उसमें बहुत संयम रहता है, जिसको कोई भी इनकार नही सकता। मगर हम दुनिया की तरफ, अपने में झुकाव आने देते है।

'कोई अश्लील बात तुम्हारे मुँह से न निकले, परन्तु केवल ऐसी बात निकले जो उस समय की आवश्यकता के अनुसार उन्नति के लिए उत्तम हो, जिससे कि सुनने वालों पर अनुग्रह हो।' (इफिसियों 4:29) जो बातें सुनने वालों पर अनुग्रह नही लाये, ऐसी बातें मुंह से न निकले। कीचड़ को कीचड़ साबित करने के लिए उस में पत्थर उछालने की जरूरत नही है। आपके और आप के इर्द-गिर्द लोगों के कपड़ों पर मैल उछलेगा। जब हम ऐसी बातों को कहते है जो दूसरों के लिए अनुग्रहकारी ना हो, पवित्रात्मा दु:खित होता है। जब मैंने परमेश्वर से पूछा की मैं ऐसी बातों को कह सकता हूँ की नही, परमेश्वर ने उत्तर दिया, ऐसी बाते पूछना भी गलत है। धन्य है वह जो अपनी जीभ को पवित्रात्मा के नियंत्रण में लाता है। असली सफलता तभी मिलती है जब हम पवित्रात्मा को कभी ठेस नही पहुँचाते है। आपके चारों तरफ लोगों पर एक उत्कृष्ट प्रभाव पड़ेगा। एक अन्धा आदमी मीलों दूर हुई अणुबम विस्फोट से हुई चमक से सचेत हो गया। आध्यात्मिक शक्तियाँ जो हमारे जरिये कार्य करते है, वे अत्यंत प्रबल हो जायेंगे। 'अर्थात् सम्पूर्ण दीनता और नम्रता तथा धीरज के साथ प्रेम से एक दूसरे के प्रति सहनशीलता प्रकट करो, और यत्न करो कि मेल बन्धन में आत्मा की एकता सुरक्षित रहे।' (इफिसियों 4:2,3)

अगर हमारी सहभागिता उस स्तर तक पहुँचे, तो हमारा संख्या में अधिक होना जरूरी नहीं। हम 'दरज़े' पर ध्यान दें। मैं जानता हूँ कि आप में से हर कोई चाहते है कि आपके घर में सब मन फिरायें। परमेश्वर के प्रति सच रहो और उनके लिए प्रार्थना करो और वे ज़रूर उद्धर पायेंगे। पवित्रात्मा को रूलाये बिना प्रार्थना करो। अपने रिश्तेदारों से प्रेम रखो। उनसे मृदुता से कहों कि उन्हें आत्मा में जन्म लेना होगा। यह बात नम्र आत्मा से कहो ना कि आध्यात्मिक घमंड से। वे यह जान पायें कि उनकी जिन्दगी में जो परमेश्वर के साथ विसंगति है, उसे ठीक किया जा सकता है। यह परम प्रधान के लिए साध्य है क्यों कि वे आपकी जिन्दगी की सारी जटिल उलझनों को जानते है। अंततः मसीही जीवन, परमेश्वर के वचन के सम्पूर्ण आधीन, की सरलता में आजादी है। शरीर तो हमेशा ही एक रुकावट है। अब तक सांसारिक आत्मा उस पर हावी था। वह आत्मा उसमें राज्य करता, पवित्र आत्मा को नीचे गिराने के कोशिश में लगा रहता। पापियों के लिए मरने को - परमेश्वर की इच्छा पूरा करने के लिए मसीह को झुकना पड़ा।

एक ठोस मृत्यु घटना अवश्य था। परमेश्वर के वचन का प्रबल रूप से सच होना जरूरी था। जब प्रार्थना की आत्मा हो, तभी पश्चात्ताप की आत्मा आ सकती है। एक परितप्त मन ही, शिक्षा-ग्रहण करने वाला मन हो सकता है और एक आज्ञाकारी हृदय बन सकता है। प्रार्थना में, आत्मा में ज्ञानातीत स्वर्ग की शक्तियाँ कार्यरथ हो जाते है। चमत्कार आम बाते बन जाती हैं और आप उनके आदी हो जाते हो। जहाँ भी आप जाओगे, आपकी उपस्थित वहाँ हलचल मचा देती है।

जहाँ भी आप जाओ, अन्धकार की शक्तियाँ हिल जायेंगीं। यीशु जानते है कि जहाँ भी वे जायें, अन्धकार की शक्तियों में हलचल मचेगी और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोग चिल्ला उठेंगे और आलोचना करने वाले भी भड़क उठेंगे। आलोचक तो हमेशा ही आपके रास्ते में आएँगे। उन पर ध्यान मत देना। हमारी बातचीत में, दूसरों से सहभागिता में, हम रास्ते से ना भटकें और दूसरों की वजह से नीचे ना गिरें। आपके सामने खुला मैदान बहुत विस्तार से है और व्यर्थ करने के लिए समय नहीं है। अगर एक डॉक्टर को सौ मरीजों का मुआइना करना हो तो, वह किसी मेहमान से इधर-उधर की बातें करते हुए समय बेकार नहीं कर सकता। वे आपना काम खत्म होने तक उसी में लगे रहेंगे। परमेश्वर के मन में आप के लिए कई ऐसे रोगी होंगे। आपके जीवन का अंत होने से पहले, आप को उन सबकी सेवा करनी होगी।

सुन्दर सिंह जी ने कहा, 'प्रार्थना में मग्न आदमी के लिए चमत्कार एक साधारण सी बात है।' प्रार्थना - मन की सीमाओं से आगे बढ़कर आध्यात्मिक क्षेत्रों में पहुँचता होगा। जो चीजें निचले स्थानों पर उपलब्ध नहीं है, वहाँ आपको वे पवित्रात्मा के जरिये मिल जायेंगी। मन फिराते ही आपको यह जानना होगा कि आपने महत्वपूर्ण आविष्कार किया है और परमेश्वर की उस निधि को आप अपना बनाने की शुरूआत किया है। वह खजाना बहुत ही विशाल है। आप उसको पूरी तरह से देख नही पाओगे। किसी भी कीमत पर आपको, अपना आध्यात्मिक जीवन संभालना होगा। परमेश्वर के पवित्र आत्मा को दु:ख मत पहुँचाओ।

- एन. दानिय्येल।

For More Details Please contact on any of the following Bookstalls

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.

BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002

MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840

NOIDA(Delhi): Beautiful Books, P-7, Sector-12, Next to Noble Co-oprative Bank, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09811955149.

GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733

SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

कोलगेट

कोलगेट पॉमोलीव, अमेरिका की पुरानी कम्पनियों में से एक है। वह लगभग दो सौ साल पुरानी है। उसकी शुरूआत विल्यम कोलगेट नामक नौजवान ने की थी। सोलह साल की आयु में, वह संसार में सफलता की तलाश में घर छोड़ चल पड़ा था। इस दुनिया में जो कुछ भी अपना कह सकता था, एक गठरी बांधकर, हाथों में लिए निकल पड़ा। मगर जब वह शहर जाने वाले रास्ते से जा रहा था, एक पुराने पड़ोसी से उसकी मुलाकात हुई जो एक नहरी नाव का कप्तान था। उस दिन उस वृद्ध आदमी ने जो बातें कहीं, उनका विल्यम पर बहुत गहरी प्रभाव रहा। जिन्दगी भर वो शब्द उसके साथ रहे।

'तो, विल्यम कहाँ जा रहे हो?' कप्तान ने पूछा।

'मुझे नहीं मालूम। पिताजी आगे मेरी देखभाल नहीं कर पायेंगे, क्योंकि वे बहुत गरीब है। और वे कहते है कि अब मुझे, अपने लिए कुछ कमाना होगा।' विलेयम ने आगे कहा कि किसी भी हुनर से वह अनजान है। किसी भी व्यवसाय में वे कुशल नही है, सिवाय साबुन और मोमबत्ती बनाने के।

'अच्छी बात है' बूढ़े आदमी ने कहा, आओ, हम मिलकर प्रार्थना करें और मैं एक छोटी सी सलाह भी देना चाहता हूँ।'

वहीं रास्ते में, दो व्यक्ति - एक वयोवृद्ध और एक नौजवान - दोनों घुटने टेककर प्रार्थना करने लगे। उस वृद्ध आदमी ने विल्यम के लिए, अपने पूरे दिल से प्रार्थना की। तब उठते उस कप्तान ने कहा:

कोई न कोई न्यूयार्क में सब से मशहूर साबुन बनाने वाला, बनने वाला है। वो कोई भी हो सकता है। तुम भी हो सकते हो। एक अच्छे आदमी बने रहो, मसीह को अपना हृदय दे दो। अपनी कमाई में से जो परमेश्वर का है, उन्हें दे दो; ईमान्दारी से साबुन बनाओ; और सही वजन का बनाओ; और मुझे यकीन है, तब भी तुम एक सफल और धनी व्यक्ति बनोगे।

जब विल्यम न्यूयार्क पहुँचा, नौकरी की तलाश में उसे बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मगर उसने उस वृद्ध व्यक्ति की सलाह का पालन किया। उसने अपने आप को मसीह को समर्पित किया, एक कलीसिया से जुड़ गया और वहाँ प्रभु की आराधना करने लगा। पहला डॉलर जो उसने कमाया, उससे पहला काम यह किया कि उस में से दस प्रतिशत प्रभु के काम के लिए दे दिया। उस समय से ले कर वह यह मानता था कि हर डॉलर का दस सेन्ट परमेश्वर के लिए प्रतिष्ठित और पवित्र है। वास्तव में वह जल्द ही अपनी कमाई का बीस प्रतिशत प्रभु को देने लगा। बाद में उसे तीस, चालीस और पचास प्रतिशत तक बढ़ाया। अपनी जिन्दगी में आगे चल कर वे इतने सफल व्यक्ति बन गये कि वे अपनी साल भर की पूरी कमाई - सौ प्रतिशत - प्रभु को अर्पण कर दी।

और आज भी - आज सुबह ही, लगभग दो सौ साल बाद, आप में से कुछ लोगों ने उस नौजवान की फैक्ट्री से निकली चीजों से दाँत साफ किये होंगे या मुँह धोये होंगे।

- चुनीहुई।

संवेदना हरण - बेहोशी की दवा

ऐनिसथीसिआ (संवेदना हरण - बेहोशी की दवा) की खोज से पहले, शल्य-चिकित्सा की कल्पना करें। रोगी को बाँध दिया जाता था। छुरी और आरी से हड्डियों और मांस-पेशियों की हर चीड़-फाड़ से होते अकल्पनीय दर्द के बारे में सोचें।

एक मसीही डॉक्टर ने इसके बारे में कुछ करने का निश्चय किया। सर जेम्स यंग सिंप्सन (1811-1870) स्कॉटलैण्ड के एक चिकित्सक थे। चौबीस साल की अल्प आयु में ही वे एड्निबर्ग में रॉयल मेडिकल सोसाइटी के वरिष्ठ अध्यक्ष बन गये थे। और असल में उन दिनों संभाव्य हर एक गौरव और पथ को वे हासिल कर चुकें थे। शल्य-चिकित्सा के दौरान रोगी को सुलाने के रास्तों की वे कल्पनायें करते थे। सोमवार शाम को वे कुछ डाक्टरों को अपने घर बुलाते थे। उनके साथ वे कुछ रसायन, स्फटिक और चूर्ण से प्रयोग करते थे। इनको, आग पर जलती अँगीठी में डालकर उस से निकलते धूएँ को वे सूंघते थे। 4 नवंबर 1847 तक ऐसा कुछ खास नही हुआ।

उन में से एक आदमी ने प्यारिस में क्लोरोफार्म नामक स्फटिक को खरीदा था। जब वह डॉक्टरों ने उससे निकलते धूएँ को सूँघा, तो सब बेहोश हो कर नीचे गिर पड़े थे। सिंप्सन को अपना उत्तर मिल गया। मगर उनको जल्दी ही एक और समस्या का सामना करना पड़ा। सह-मसीहियों ने उनका विरोध किया। उनका दावा है कि दर्द भी परमेश्वर - विहित जीवन का हिस्सा है। और पीड़ा से छुटकारा सिर्फ स्वर्ग में ही मिलेगा। और पृथ्वी पर उस से बच निकलने के लिए खतरनाक तरीकों की युक्ति अनैतिक है।

सर जेम्स ने इन सब बातों के जवाबों के लिए पवित्र वचन को परखा। बाइबल खोल कर ज्यादा समय भी ना हुआ था की वे इस वचन पर आ ठहरे। 'अतः यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और जब वह सो रहा था तो उसने उसकी एक पसली निकालकर उसके स्थान में मांस भर दिया।' इस विषय को ध्यान से पढ़कर सिंप्सन ने एक लेख लिखा जिसका शीर्षक है, 'शल्य-चिकित्सा और प्रसव में संवेदना हारण वस्तुओं का उपयोग, के विरुद्ध प्रचलित धार्मिक प्रतिरोधों का उत्तर।' उन्होंने अपने उस लेख का अंत इस तरह किया। 'हम इस बात से निश्चिंत रहें कि जो वास्तव में या मानवता की ओर सत्य हों और आचरण में दयापूर्ण हो, ऐसी बाते परमेश्वर के वचन के सामने

पृष्ठ 4 पर..संवेदना हरण..

सत्य की परख!

क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)

आलोचना से द्वंद

लंदन में, चार्ल्स एच. स्पर्जन ने अपनी सेवकाई प्रारंभ की। तब जिन आलोचनाओं का उनको सामना करना पड़ा, शायद कुछ ही प्रचारकों का ऐसा अनुभव रहा होगा। इस नवयुवक प्रचारक का चरित्र, चाल-चलन और इरादों के बारे में पत्रिकाओं में अक्सर खुलासा होता। बहुधा, शायद ही उनमें उनके प्रति सहानुभूति प्रकट होती। यहाँ तक कि एक या दो लेखकों ने यह संदेह व्यक्त किया कि स्पर्जन ने मन फिराया भी है, की नहीं।

उनका संदेश 'कचरा' है। उनको राकेट कहा जाता था, जो ऊँची उड़ान भरके, न जाने कहाँ जा गिरेगा। 'वो कर क्या रहा है?' एक लेखक ने पूछा। 'वो किसका सेवक है?' वो क्या सबूत देते हैं कि उनकी सेवकाई मन को जाँचने वाली है, मसीह को महिमा पहुँचानेवाली, सच को सामने लानेवाली है। क्या उससे कलीसिया की उन्नति हो सकती है। एक पापी को बदल कर, आत्माओं को बचाने में क्या उनकी सेवकाई सहायक है?

शुरुआत में स्पर्जन इन आलोचनाओं से बहुत दुखित होते थे। मगर प्रभु ने उनको शान्ति और विजय दी। हफ़्ता दर हफ़्ता, उनकी सेवकाई और चरित्र के बारे में झूठी निन्दा सुनना, उन्हें हार मानने में मजबूर कर देता, मगर उन्होंने अपनी घुटने टेककर प्रार्थना की, 'स्वामी, आप के लिए यहाँ तक की मैं अपने चरित्र की निन्दा तक सहने को तैयार हूँ। मुझे बेज़ती सहनी पड़े तो यही सही। मेरे लिए मेरा चरित्र अमूल्य है। उसकी भी बेज़ती होने दूं, अगर मेरे स्वामी, प्रभु की तरह, लोग कहें की मुझ में दुष्टात्मा है; मैं पागल आदमी हूँ; या प्रभु की तरह मुझे शराबी और पियक्कड़ आदमी कहा जाए।

श्रीमती स्पर्जन, उनके पति किन परीक्षाओं से गुजर रहें है, जानते हुए, उन्होंने अपने कमरे की दिवार में टाँगने के लिए एक आदर्श-वाक्य तैयार किया। उसका शीर्षक मत्ती 5:11-12 था - 'धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें यातना दें और झूठ बोल बोल कर तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की बातें कहें - आनन्दित और मग्न हो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल महान है। उन्होंने तो उन नबियों को भी जो तुमसे पहले हुए इसी प्रकार सताया था।' परमेश्वर के वचन ने अपना कार्य किया और एक प्रचारक अपनी लड़ाई जीत गया।

लूथर सही थे, जब उन्होंने कहा, 'निरुत्साह में, एक औरत का प्यार अत्यंत सहायक है; धन्य है वह प्रचारक की पत्नी जिसे यह जानकारी थी कि उसके पति को कब जरा से अधिक प्यार और समझ के स्पर्श की ज़रूरत है।

- चुनीहुई।

पृष्ठ 3 से..संवेदनना हरण ...

दोषी नहीं ठहरेंगी।'

सब समीक्षक चुप हो गये और शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में एक नये दिन का सूर्योदय हुआ।

जॉर्ज मुल्लर द्वारा प्रार्थना की पाँच शर्तें

परमेश्वर ने जॉर्ज मुल्लर को अपने अन्तिम दिनों में, कलीसिया के लिए एक प्रमाण के तौर पर यह दिया: परमेश्वर अक्षरश: और अद्भुत रीति से, हमेशा अब भी प्रार्थना सुनते है। श्री मुल्लर का कहना है कि उनकी जिन्दगी के दौरान, उनके अनाथालयों को संभालने के लिए दस लाख पौऊड स्टर्लिगं से भी अधिक परमेश्वर ने दिया है। केवल यही नही, प्रभु ने उनको तीस हज़ार से भी अधिक आत्माओं को उनकी प्रार्थना के जवाब में दिया है। उनमें, यतीमों के बीच में से ही नहीं, कई दूसरे भी है जिन केलिए वह हर रोज नियमित रूप से, विश्वास से प्रार्थना किया करते थे। इसी अटल विश्वास के साथ कि वे एक दिन जरूर उद्धार पाएंगे। कुछ लोगों के लिए वह करीब पचास साल तक प्रार्थना करते रहें। 'पाँच ऐसी शर्तें है जो हमेशा पूरा करने की कोशिश करता हूँ।' वे कहते है, ' जिसका पालन करने से मुझे, मेरी प्रार्थनाओं का जवाब मिलने का यकीन है':

1. मुझे जरा भी संकोच नही क्योंकि मुझे यह आश्वासन है कि उन्हें बचाना प्रभु की इच्छा है। 'जो यह चाहता है कि सब लोग उद्धार प्राप्त करें और सत्य जानें। (1 तीमुथियुस 2:4) और हमें यह आश्वासन है कि 'यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगे, तो वह हमारी सुनता है।' (1 यूहन्ना 5:14)

2. उनके उद्धार के लिए मैंने अपने नाम से कभी नही माँगा, बल्कि अपने अनमोल प्रभु यीशु के पावन नाम में और केवल उन्ही के बल पर माँगा। (यूहन्ना 1:14)

3. मुझे दृढ़ विश्वास इस बात से है कि परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुनने के लिए हमेशा इच्छुक है। (मरकुस11:24)

4. मुझे ध्यान नहीं कि मैंने कभी अपने को किसी पाप के आधीन होने दिया क्योंकि, 'यदि मैं अपने मन में अधर्म को सँजोए रखता, तो प्रभु मेरी न सुनता।' (भजन संहिता 66:18)

5. मैं विश्वास सहित प्रार्थना में लगातार लगा रहा। कुछ लोगों के लिए 52 से भी अधिक सालों से, और ऐसा जवाब आने तक करता रहूँगा: 'क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न करेगा जो रात-दिन उसे पुकारते रहते हैं?' (लुका 18:7)

इन विचारों को अपने हृदय में ले लो। और इन नियमों के अनुसार प्रार्थना का अभ्यास करो। प्रार्थना केवल अपनी इच्छाओं का उच्चारण ना रहे। प्रार्थना परमेश्वर के साथ एक सहभागिता रहे, तब तक, जब तक कि हम विश्वास से यह जाने कि हमारी प्रार्थना सुन ली गयी है।

जॉर्ज मुल्लर जिस पथ पर चले है वह एक नया, जीवित मार्ग है जो हमें अनुग्रह के सिंहासन तक ले चलता है। यह मार्ग हम सब के लिए खुला है।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।